Brijesh

प्रश्न: नवीन आर्थिक सुधारों के सिद्धांतों एवं उद्देश्यों को स्पष्ट कीजिए। (250 शब्द)

उत्तर: शीत युद्ध की समाप्ति के उपरांत वैश्विक अर्थव्यवस्था में विशिष्ट प्रकार के लक्षण दृष्टिगोचर हुए। इन्हीं के साथ सामंजस्य स्थापित करने हेतु भारतीय अर्थव्यवस्था में 1991 में नवीन आर्थिक सुधारों की नींव पड़ी। नवीन आर्थिक सुधारों के चार मौलिक सिद्धांत हैं - उदारीकरण, निजीकरण, भूमंडलीकरण और बाजारीकरण।

नवीन आर्थिक सुधारों के चार आयामों का संक्षिप्त वर्णन:-

उदारीकरण का तात्पर्य आर्थिक प्रक्रियाओं का सरलीकरण कर लाभ प्राप्त करने तथा विश्व के एकीकरण के प्रयत्न किये जाने से है। प्रक्रियाओं के सरलीकरण का अर्थ राज्य की भूमिका का एक नियंत्रक से विनियामक की हो जाने से है। इसके तहत घरेलू तथा विदेशी बाजार के संबंध में प्रत्येक प्रकार के प्रतिबंधों को समाप्त करना है।

निजीकरण का तात्पर्य नये निजी उद्योगों को बढ़ावा तथा पुराने सार्वजनिक क्षेत्रों में निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाना है। अराष्ट्रीयकरण और विनिवेश सार्वजनिक क्षेत्र के निजीकरण के दो रास्ते हैं। जब राज्य की भूमिका एक नियंत्रक से विनियामक की हो जाती है तब आर्थिक स्तर पर निजी क्षेत्र की भूमिका का विस्तार होता है।

भूमंडलीकरण का अर्थ है घरेलू अर्थव्यवस्था का विश्व अर्थव्यवस्था से जुड़ना। इस स्थिति में वस्तुओं, सेवाओं, पूंजी, प्रौद्योगिकी तथा उत्पादन के साधनों आदि का बिना प्रतिबंध के स्वतंत्र रूप से विश्व के देशों के साथ प्रवाह होता है। इससे आपसी प्रतियोगिता के कारण कुशलता उन्नयन और गुणवत्ता में वृद्धि होती है।

बाजारीकरण का अर्थ है बाजार की शक्तियों यानी मांग और पूर्ति की शक्तियों द्वारा उत्पादन तथा संसाधनों का बंटवारा। बाजारीकरण भूमंडलीकरण और उदारीकरण की आवश्यक दशा है।

नवीन आर्थिक सुधारों के प्रमुख उद्देश्य:

नवीन आर्थिक सुधारों के निम्नांकित प्रमुख उद्देश्य हैं:-

1. साधन एवं उत्पाद बाजार के संरचनात्मक अवरोधों की समाप्ति।
2. विनियंत्रण एवं विनियमन के माध्यम से अर्थव्यवस्था को खोलना।
3. अर्थव्यवस्था में प्रतियोगिता की भावना का विकास एवं इसके आधार पर क्षमता एवं उत्पादकता में वृद्धि।
4. राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को विश्व की अर्थव्यवस्थाओं के साथ एकीकरण करना।
5. उदारीकरण के सिद्धांतों के आधार पर अर्थव्यवस्था के संवृद्धि एवं विकास सुनिश्चित करना।
6. इसके द्वारा राजकोषीय समायोजन, भुगतान शेष समायोजन एवं मुद्रास्फीति पर नियंत्रण करना।
7. अर्थव्यवस्था को आर्थिक संकट से उबारने हेतु - कार्यात्मक एवं संरचनात्मक सुधार करना।
8. व्यापार, विनियोग तथा प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण के माध्यम से भारतीय अर्थव्यवस्था का विश्व के देशों के साथ समन्वय स्थापित करना।
9. देश में कुशलता, प्रतियोगिता की भावना तथा उत्पादकता में वृद्धि करना।

निष्कर्ष:-

सारांशतः भारतीय अर्थव्यवस्था में किए गए नवीन आर्थिक सुधारों के द्वारा वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व के विकसित देशों से प्रतियोगिता की स्थिति में लगभग आ गई है और इसके सुफल भविष्य में दृष्टिगत होने की संभावना बलवती है।

आर्थिक सुधारों के विभिन्न चरणों में उद्योग / आर्थिक सुधार

वर्ष 1991 में प्रथम चरण के आर्थिक सुधारों के तहत संरचनात्मक सुधारों पर बल दिया गया था। इन सुधारों में औद्योगिक विनियमन के लिए औद्योगिक लाइसेंस व्यवस्था का उदारीकरण और विनिर्माण उद्योगों एवं लघु उद्योगों को प्रोत्साहित किया गया। मूलतः इन सुधारों का उद्देश्य औद्योगिक ढाँचे में परिवर्तन कर औद्योगीकरण को त्वरित गति प्रदान करना था। दूसरी ओर संस्थानात्मक सुधारों में विनिवेश के माध्यम से सार्वजनिक क्षेत्र में सकारात्मक निजी निवेश को प्रोत्साहित करना भी शामिल था।

यद्यपि पिछली सरकारों ने विनिवेश को व्यापक स्तर पर क्रियान्वित करने का निर्णय लिया था लेकिन वर्तमान सरकार की विनिवेश नीति एक नियंत्रणकारी प्रक्रिया के अंतर्गत लागू की जा रही है। किसी भी स्थिति में भारत की अर्थव्यवस्था तथा औद्योगिक ढाँचे को सुदृढ़ बनाने के लिए यह आवश्यक है कि कंपनियों की पहचान कर उनमें विनिवेश की सीमा तय की जाय।

दूसरे चरण के आर्थिक सुधारों में कार्यात्मक सुधारों अथवा वित्तीय क्षेत्र के सुधारों पर बल दिया गया है। इस दिशा में बैंकों में जोखिम प्रबंधन (Risk Management) के दृष्टिकोण से RBI ने अंतर्राष्ट्रीय मापदण्डों के आधार पर दिशा निर्देश दिये हैं। वित्तीय क्षेत्र में एक प्रमुख सकारात्मक बदलाव बीमा क्षेत्र को निजी क्षेत्र के लिए खोले जाने के रूप में सामने आया है। इसमें निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित करने से सुदृढ़ तथा प्रतिस्पर्द्धी बीमा उद्योग लम्बी अवधि की बचत को बेहतर बनाने के साथ-साथ उपभोक्ता सेवा में सुधार लाने तथा पूँजी बाजारों के लिए लम्बी अवधि के वित्त प्रवाह को भी बेहतर बना सकेगा।

तृतीय चरण के आर्थिक सुधारों में श्रम-प्रबंधन संबंधों को सुदृढ़ बनाकर औद्योगिक अनुशासन स्थापित करने के प्रयास किये जा रहे हैं। इसके लिए 1926 के श्रम कानूनों के अतिरिक्त अन्य श्रमिक तथा औद्योगिक विवादों या कानूनों में संशोधन प्रस्तावित हैं। इस चरण में शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी सामाजिक अवसंरचनाओं के निर्माण तथा विकास पर भी बल दिया गया है।

Brijes

★ नवीन आर्थिक सुधारों के चार मौलिक सिद्धांत

L 1. उदारीकरण : घरेलू तथा विदेशी बाजार के संबंध में प्रत्येक प्रकार के प्रतिबंधों को समाप्त करना ⇒ प्रक्रियाओं का खुलीकरण

P 2. निजीकरण : नये निजी उद्योगों को बढ़ावा तथा पुराने सार्वजनिक क्षेत्रों में निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाना

G 3. विश्वीकरण : घरेलू अर्थव्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्था से जोड़ना

M 4. बाजारीकरण : बाजार की शक्तियों यानी माँग एवं पूर्ति की शक्तियों द्वारा उत्पादन और संसाधनों का बँटवारा।

★ नई आर्थिक सुधारों के दो रूप →

1. समष्टि आर्थिक स्थिरीकरण →
   - a) राजकोषीय नीति सुधार
   - b) मौद्रिक नीति सुधार
   - c) बाह्य क्षेत्र सुधार → (भुगतान शेष, आयात-निर्यात, रुपये की परिवर्तनीय व्यवस्था)
2. संरचनात्मक सुधार →
   - (i) उद्योग नीति सुधार
   - (ii) सार्वजनिक क्षेत्र सुधार
   - (iii) वित्तीय क्षेत्र सुधार
   - (iv) व्यापार एवं पूँजी प्रवाह सुधार

★ द्वितीय पीढ़ी के सुधार (1999-2000) →

1. राज्यों की ओर सुधारों का विस्तार
2. विधि व्यवस्था सुधार
3. साधन बाजार सुधार
4. सामाजिक क्षेत्र सुधार
5. पर्यावरण सुरक्षा
6. राजकोषीय सुधार